भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
समाचार पत्रिका

जनवरी - मार्च, 2025 hindicell@iiti.ac.in सप्तम् अंक

आईआईटी इंदौर बना एटीएमएएन 2.0 का विजेता

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर ने आईआईटी बॉम्बे के आईओटी (IoT) व आईओई (IoE) के प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र में आयोजित एटीएमएएन (ATMAN) 2.0 का ग्रैंड फिनाले चैलेंज जीता। एटीएमएएन (ATMAN) 2.0 एक दिवसीय कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य एग्रीटेक डोमेन में नई तकनीकों को आगे लाना है, जिन्हें देश भर के प्रमुख संस्थानों में विकसित किया जा रहा है और उन्हें एग्रीटेक समुदाय के सामने अपने अनुसंधान और विकास कौशल को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करना है और उन्हें प्रयोगशाला से मार्केट तक की यात्रा में सहायता करना है। प्राप्त 84 प्रस्तावों में से, 07 सर्वश्रेष्ठ प्रस्तावों को पिच फेस्ट के माध्यम से चुना गया, जिन्हें कृषि-तकनीक के विकास और कार्यान्वयन के लिए तकनीकी विकास सहायता और प्रयोगशाला से मार्केट तक मार्गदर्शन के साथ अनुदान के माध्यम से समर्थन दिया जाएगा। प्रत्येक प्रस्ताव को ₹2 करोड़ तक का अनुदान दिया जाएगा। इन प्रस्तावों का चयन कई दौर की प्रस्तुति के बाद किया गया। आईआईटी इंदौर "पोर्टेबल किट का विकास - पारंपरिक रूप से उपज के उपरांत प्रबंधन का एक विकल्प" परियोजना पर काम करेगा। इस पर, आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्य डॉ. देबायन सरकार ने कहा कि अपर्याप्त भंडारण सुविधाओं के कारण कृषि उत्पादों की कटाई के बाद की प्रक्रिया एक बड़ी चुनौती रही है। कोल्ड स्टोरेज की लागत में प्रभावशाली रूप से वृद्धि हुई है, जिससे वैकल्पिक तकनीक का आविष्कार हुआ है। इस परियोजना का प्राथमिक लक्ष्य एक पोर्टेबल किट विकसित करना है, जिसमें एक छोटा, विटामिन बी2 स्प्रे घोल शामिल हो, जो एक फ्लैश दृश्य प्रकाश स्रोत के साथ संयुक्त होने पर फोटोसेंसिटाइज़र के रूप में कार्य करता है। यह किट खुले खाद्य पदार्थों और पैक किए गए खाद्य घटकों में रोगाणुओं को फोटोडायनामिक निष्क्रिय करने की अनुमति देता है।

नेटसाइएक्स (NetSciX) 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर द्वारा 15 से 17 जनवरी, 2025 के बीच नेटवर्क साइंस सोसाइटी के सिग्नेचर विंटर कॉन्फ्रेंस नेटसाइएक्स (NetSciX) के 2025 संस्करण का आयोजन किया गया, जो कि पहली बार भारत में आयोजित हुआ। इसमें लगभग 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें 80 मौखिक प्रस्तुति और 80 पोस्टर प्रस्तुति शामिल थी जिन्होंने नेटवर्क विज्ञान में अनुसंधान के उभरते क्षेत्र के विविध अनुप्रयोगों को दर्शाया। नेटसाइएक्स (NetSciX) लोकप्रिय नेटसाइ (NetSci) सम्मेलन श्रृंखला का आयोजन करता है, जो नेटवर्क विज्ञान के उभरते क्षेत्रों में काम करने वाले शोधकर्ताओं और पेशेवरों के बढ़ते समुदाय के लिए एक विशेष मंच प्रदान करता है। यह सम्मेलन कंप्यूटर तथा सूचना विज्ञान, भौतिकी, गणित, सांख्यिकी, जीवन विज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा वित्त, कला तथा डिजाइन में नेटवर्क विज्ञान अनुसंधान में अंत:विषय संचार और सहयोग को बढ़ावा देता है। इस दौरान, आईआईटी इंदौर की संकाय सदस्य प्रोफेसर सारिका जालान और बिंगहैमटन यूनिवर्सिटी, अमेरिका के प्रोफेसर हिरोकी सायमा इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे, जबकि आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्य प्रोफेसर बापन घोष और प्रोफेसर मानवेन्द्र महतो ने स्थानीय आयोजन समिति के रूप में कार्य किया। इस सम्मेलन की पिछली बैठकें वेनिस, ब्यूनस आयर्स, टोक्यो, सैंटियागो, हांग्जो, तेल अवीव, ब्रोकला, रियो डी जेनेरियो जैसे विश्व भर के स्थानों में आयोजित की जा चुकी हैं।

पद्म श्री प्रोफेसर एच. सी. वर्मा द्वारा संस्थान व्याख्यान सत्र

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर द्वारा "विमर्श: संस्थान लोक व्याख्यान" के अंतर्गत 28 मार्च, 2025 (शुक्रवार) को विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर, विशिष्ट वक्ता के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के भौतिकी विभाग के एमेरिटस प्रोफेसर, पद्म श्री प्रोफेसर एच. सी. वर्मा को आमंत्रित किया गया। इस दौरान, प्रोफेसर वर्मा ने "माय एजुकेशनल एक्सपेरिमेंट्स" विषय पर अपने विचार साझा किए। इस कार्यक्रम की शुरुआत में आईआईटी इंदौर की संस्थान सेमिनार एवं आउटरीच समिति के संयोजक प्रोफेसर रघुनाथ साहू ने आमंत्रित वक्ता का परिचय देते हुए उनका अभिनंदन किया एवं प्रोफेसर वर्मा के भौतिकी के क्षेत्र में उनके विशिष्ट कार्यों एवं शोध पर प्रकाश डाला। इसके उपरांत, प्रोफेसर वर्मा ने अपने व्याख्यान में बेसिक साइंस और भौतिकी के कुछ मूल सिद्धांतों एवं उनके अनुप्रयोगों के साथ-साथ अपने जीवन के कुछ प्रेरणादायी अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया। साथ ही, वे उपस्थित छात्रगण के विचारों एवं अनुभवों से भी अवगत हुए। इस दौरान, संस्थान के संकाय सदस्यगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं छात्रगण बहुत ही अधिक संख्या में उपस्थित थे।

क्षेत्रीय स्पिक मैके 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर द्वारा 17-19 जनवरी, 2025 के बीच अपने परिसर में क्षेत्रीय स्पिक मैके, सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड कल्चर अमंग्स यूथ, सम्मेलन का आयोजन किया गया, जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण उपलब्धि साबित हुआ। अक्टूबर 2024 में कर्नाटक के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान धारवाड़ में आयोजित पिछले सम्मेलन की सफलता के तरह ही इस कार्यक्रम में भी मध्य प्रदेश और राजस्थान के लगभग 150 छात्र और स्वयंसेवक उपस्थित थे। यह सम्मेलन स्पिक मैके के दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह से मेल खाता है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक बच्चे को भारतीय और विश्व विरासत में निहित प्रेरणा और रहस्यवाद का अनुभव प्रदान करना है तथा जिसका महत्वाकांक्षी लक्ष्य 2030 तक प्रत्येक बच्चे के बीच इन परंपराओं को पहुंचाना है। हमेशा की तरह यह सम्मेलन एक समृद्ध सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करने का विश्वास दिलाता है, जिसमें सम्मेलन के दौरान प्रत्येक दिन भारत के कुछ सबसे प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा प्रदर्शन शामिल रहे: श्री तारापद रजक (पुरुलिया छाऊ), पं. उल्हास कशाळकर (हिंदुस्तानी गायन), उस्ताद शाहिद परवेज़ खान (सितार), उस्ताद राजा मियां (हिंदुस्तानी गायन)।

नर्मदा कार्यशाला 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र (सी-नर्मदा) द्वारा 16-17 जनवरी, 2025 को “नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन के एकीकृत दृष्टिकोण” पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जल शक्ति मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र (सी-नर्मदा), नर्मदा नदी क्षेत्र के लिए स्थिति आकलन एवं प्रबंधन योजना (सीएएमपी) पर अध्ययन कर रहा है। आईआईटी इंदौर और आईआईटी गांधीनगर के संयुक्त नेतृत्व और आईआईटी कानपुर में सी-गंगा की निगरानी में चल रही इस परियोजना का उद्देश्य नर्मदा नदी का पुनर्जीवन करना और मानवीय गतिविधियों से प्रभावित इसके पारिस्थितिक स्थिति को सुदृढ़ बनाना है। यह पाँच प्रमुख स्तंभों पर केंद्रित है: प्रदूषण रहित नदी प्रवाह (निर्मल धारा), अविरल नदी प्रवाह (अविरल धारा), समन्वित संरक्षण विकास, लोगों को नदी विज्ञान से अवगत कराना और प्रबंधन। इस पर, श्री आशीष दत्ता, सदस्य-पावर, एनसीए ने नदी के महत्व और सतत प्रबंधन में शैक्षणिक भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला। वहीं, आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने नर्मदा नदी प्रबंधन परियोजनाओं में विभिन्न विभागों के छात्रों और संकाय सदस्यों को शामिल करने के महत्व पर जोर दिया और भागीदारी तथा सहयोग बढ़ाने के लिए एक मॉडल विकसित करने का सुझाव दिया। इसी क्रम में, सी-नर्मदा के संयोजक प्रोफेसर मनीष कुमार गोयल ने कार्यशाला के उद्देश्यों को रेखांकित किया, जिसमें नदी क्षेत्र प्रबंधन में सहयोग को बढ़ावा देने और उन्नत उपकरणों का लाभ उठाने के उद्देश्य शामिल थे। साथ ही, उन्होंने बहुआयामी दृष्टिकोण और सहयोग के माध्यम से अविरल तथा निर्मल धारा को प्राप्त करने पर जोर भी दिया।

एग्रीहब: किसानों के लिए सौगात

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में 27 जनवरी, 2025 को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), मशीन लर्निंग (एमएल) और डीप लर्निंग (डीएल) का लाभ उठाते हुए सतत कृषि के लिए उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) एग्रीहब का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई), भारत सरकार के सचिव श्री एस. कृष्णन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति रहे। वहीं, डॉ. सी.आर. मेहता, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएई भोपाल, श्री मगेश एथिराजन, महानिदेशक, सी-डैक और डॉ. कुंवर हरेंद्र सिंह, निदेशक, आईसीएआर-आईआईएसआर इंदौर भी सहयोगी संस्थानों के प्रतिनिधियों के रूप में मौजूद थे। इस कार्यक्रम के दौरान, श्री एस. कृष्णन ने परियोजना के अंत:विषय गुण पर प्रकाश डाला और किसानों के लाभ के लिए एचपीसी और एआई का लाभ उठाने के लिए आईआईटी इंदौर, आईसीएआर और सीडैक जैसे संस्थानों को एक मंच पर साथ में कार्य करने की बात कही। उन्होंने नवाचार को बढ़ावा देने में स्टार्टअप के महत्व पर जोर दिया, साथ ही कृषि उपज और लाभ बढ़ाने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने हेतु स्थापित उद्योगों के साथ सहयोग की भी बात कही। एग्रीहब एक बहुविषयक, बहु-संस्थागत सहयोगात्मक पहल है जिसका उद्देश्य नवाचार को बढ़ावा देना और भारतीय कृषि में बदलाव लाना है। शोधकर्ताओं, प्रजनकों और किसानों को सशक्त बनाने के मिशन के साथ, एग्रीहब एक सहयोगी मंच के रूप में काम करेगा जो भारतीय कृषि के लिए नवीन समाधान विकसित करने के लिए विविध क्षेत्रों के हितधारकों को एक साथ लाएगा। इस परियोजना का नेतृत्व आईआईटी इंदौर की प्रोफेसर अरुणा तिवारी और प्रोफेसर पवन कांकर कर रहे हैं।

गैर-लकड़ी वन उत्पादों पर जंगल की आग का प्रभाव

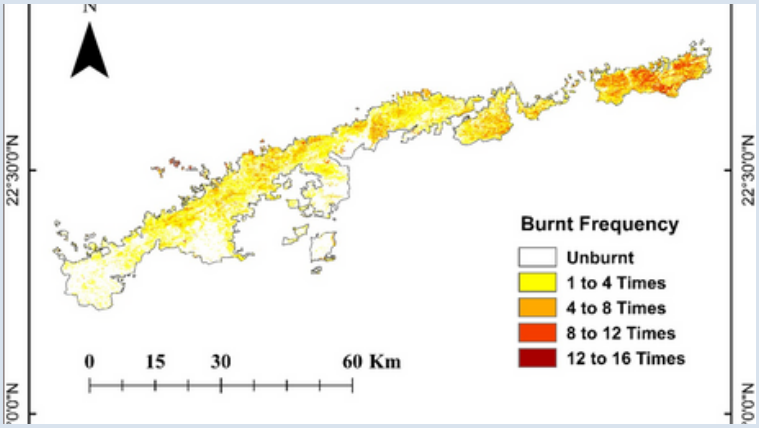

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर और भारतीय वन प्रबंध संस्थान (आईआईएफएम) द्वारा किए गए एक संयुक्त शोध अध्ययन ने मध्य प्रदेश के होशंगाबाद वन प्रभाग में गैर-लकड़ी वन उत्पादों (एनटीएफपी) पर जंगल की आग के गहन प्रभाव को उजागर किया है। साउथ एशियन नेटवर्क फ़ॉर डेवलपमेंट एंड एनवायरनमेंटल इकोनॉमिक्स (एसएएनडीईई_आईसीआईएमओडी), काठमांडू, नेपाल द्वारा वित्तपोषित इस अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि जंगल की आग किस तरह से वन-निर्भर समुदायों को प्रभावित करती है और इससे राहत के लिए आवश्यक नीतिगत उपाय प्रस्तावित किए गए हैं। आईआईटी इंदौर से इस अध्ययन की मुख्य अन्वेषक डॉ. मोहनासुंदरी ने कहा कि इस शोध ने एनटीएफपी और स्थानीय आजीविका पर जंगल की आग के प्रभावों के बारे में तीन महत्वपूर्ण निष्कर्षों को उजागर किया है। सबसे पहला, उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में अधिक बार और अधिक भीषण आग लगती है, जिससे महत्वपूर्ण पारिस्थितिक क्षति और आर्थिक हानि होती है तथा लाभ केवल कुछ ही को मिल पाता है। दूसरा, नियंत्रित, छोटे पैमाने की आग एनटीएफपी पुनर्जनन को बढ़ावा देकर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है, जिससे अधिक सतत संग्रहण प्रक्रिया सुनिश्चित हो सकती है। तीसरा, जबकि कृषि एक महत्वपूर्ण आय स्रोत बनी हुई है, एनटीएफपी छोटे भूमि जोत वाले ग्रामीण परिवारों का पोषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे वे आर्थिक लचीलेपन के लिए महत्वपूर्ण बन जाते हैं।

षोडश स्थापना दिवस 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में 17 फरवरी, 2025 को संस्थान का 16वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर, भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सचिव डॉ. राजेश गोखले मुख्य अतिथि थे। साथ ही, कार्यक्रम के दौरान आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी भी मौजूद थे। इस स्थापना दिवस का मुख्य आकर्षण ट्रांजिट लैब कॉम्प्लेक्स "संवर्धन प्रौद्योगिकी विकास संकुल" का उद्घाटन था। यह एक ऐसा संकुल है जिसमें 433 वर्ग मीटर के क्षेत्र में 04 प्रयोगशालाएँ बनाई गई हैं। वहीं, इस भवन में वर्षा जल संचयन की सुविधा भी है, जिससे प्रतिवर्ष लगभग 2.62 लाख लीटर जल संग्रहित होगा। इस उपलक्ष्य पर, संस्थान द्वारा वरिष्ठ संकाय सदस्य प्रोफेसर रघुनाथ साहू और प्रोफेसर बिस्वरूप पाठक को सम्मानित किया गया, जिन्हें राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की फेलोशिप प्रदान की गई है। वहीं, आठ सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी पुरस्कार - इस पुरस्कार के माध्यम से अभूतपूर्व नवाचारों और तकनीकी प्रगति को सम्मानित किया जाता है जिनमें स्थायी प्रभाव बनाने की क्षमता होती है। अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रभाव डालने वाले असाधारण विद्वत्तापूर्ण योगदान और अनुसंधान उत्कृष्टता को सम्मानित करने के लिए ग्यारह सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा, संस्थान के कर्मचारियों को उनकी कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और अटल सहयोग के लिए उत्कृष्ट कर्मचारी पुरस्कार भी दिए गए। इस अवसर पर “हैंडबुक ऑफ़ आइडियाज, इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजीज, आईआईटी इंदौर” के दूसरे संस्करण का विमोचन भी किया गया, जो आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों और छात्रों द्वारा विकसित लगभग 180 प्रौद्योगिकियों का एक व्यापक संकलन है।

अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग कार्यशाला

अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के जेपी नारायण राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र (जेपीएन सेंटर), मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल (एसएचएसएस) और अंतरराष्ट्रीय कार्यालय द्वारा 17-23 फरवरी, 2025 के बीच ग्लोबल सेमिनार साउथ एशिया: ऑनसाइट वर्जन पर अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह पहल क्वांसी गाकुइन यूनिवर्सिटी (केजीयू), निशिनोमिया, जापान और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) का एक हिस्सा है, जो शैक्षणिक आदान-प्रदान और अनुसंधान सहयोग के लिए उनकी प्रतिबद्धता में एक विशेष उपलब्धि है। यह कार्यशाला अंतर-सांस्कृतिक शिक्षा के लिए एक मंच के रूप में काम की, जो दोनों संस्थानों के संकाय सदस्यों और छात्रों को बौद्धिक चर्चा, शोध साझा करने और अनुभवात्मक शिक्षा में शामिल होने के लिए एक साथ लाई गई। केजीयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर, प्रोफेसर शिहो केई ने वैश्विक रूप से सक्षम पेशेवरों को विकसित करने के अपने विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण को साझा किया, जो एक दूसरे से जुड़ी दुनिया में योगदान दे सकते हैं। उन्होंने अपने विचार साझा करते हुए छात्रों को विविध शैक्षणिक और पेशेवर परिदृश्यों में मार्गदर्शन करने के लिए तैयार करने में इस तरह के सहयोग के महत्व को रेखांकित किया। आईआईटी इंदौर की ओर से, एमओयू समन्वयक प्रोफेसर प्रीति शर्मा ने इस बात पर जोर दिया कि यह कार्यशाला जापानी छात्रों को भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि, आईटी क्षेत्र में नेतृत्व, पारंपरिक और आधुनिक विनिर्माण प्रणालियों में प्रगति और पर्यावरण संरक्षण में पहल के बारे में सेमिनारों और साइट विजिट की एक श्रृंखला के माध्यम से गहराई से जानने का अवसर प्रदान करती है।

कंक्रीट में खाद्य अपशिष्ट: कार्बन न्यूनीकरण की दिशा में एक नया कदम

वैश्विक स्तर पर, लगभग एक तिहाई खाद्य उत्पादन बर्बाद हो जाता है। इस अपशिष्ट के अपघटन से लगभग 4400 मिलियन टन CO_2 समतुल्य या वैश्विक कार्बन उत्सर्जन का 8% निकलता है। क्या होगा अगर कोई बताए कि खाद्य अपशिष्ट वास्तव में कंक्रीट के गुणों में मदद कर सकता है और CO_2 उत्सर्जन को कम कर सकता है। हाल ही में आईआईटी इंदौर के शोधकर्ताओं की एक टीम ने यह दर्शाया है कि खाद्य अपशिष्ट के साथ-साथ चयनित गैर-रोगजनक बैक्टीरिया को मिलाने से कंक्रीट की ताकत दोगुनी हो सकती है, स्थायित्व में सुधार हो सकता है, दरारें ठीक हो सकती हैं और CO_2 को कैप्चर करने में मदद मिल सकती है। इससे कई लाभ मिलते हैं और कंक्रीट की प्रभावी लागत भी कम हो जाती है। इस शोध टीम में प्रोफेसर संदीप चौधरी, डॉ. हेम चंद्र झा, डॉ. अक्षय अनिल ठाकरे, श्री शिवम राजपूत और डॉ. संचित गुप्ता शामिल हैं, जिन्होंने सिविल और बायो इंजीनियरिंग की अपनी विशेषज्ञता का परिचय देते हुए इस प्रक्रिया को विकसित किया है। इस शोध टीम का अनुमान है कि उनकी प्रक्रिया के अंतिम रूप में निर्माण उद्योग से होने वाले CO_2 उत्सर्जन में 20% तक की कमी आ सकती है, जो देश में ग्रीनहाउस गैसों के सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है। इस पर, प्रोफेसर संदीप ने कहा कि जब खाद्य अपशिष्ट का अपघटन होता है तो इससे CO_2 उत्पन्न होती है। अगर हम कंक्रीट में बैक्टीरिया और खाद्य अपशिष्ट मिलाते हैं, तो CO_2 अंदर से रिलीज होती है। यह CO_2 कंक्रीट में मौजूद कैल्शियम आयनों के साथ प्रतिक्रिया करके कैल्शियम कार्बोनेट क्रिस्टल बनाती है। ये क्रिस्टल कंक्रीट में मौजूद छिद्रों और दरारों को भर देते हैं और वजन पर कोई खास असर डाले बिना कंक्रीट को ठोस बनाते हैं। वहीं, डॉ. झा ने कहा कि खाद्य अपशिष्ट को शामिल करने और उपयुक्त गैर-रोगजनक जीवाणु की पहचान करने की प्रक्रिया इसे अलग बनाती है। कंक्रीट में बैक्टीरिया के पहले के अनुप्रयोगों में सिंथेटिक रसायनों का उपयोग किया जाता था, जिससे यह प्रक्रिया महंगी और कम टिकाऊ हो जाती थी। खाद्य अपशिष्ट को शामिल करने के कई अलग-अलग तरीकों की जांच करने के बाद, हमने पाउडर के रूप में खाद्य अपशिष्ट का उपयोग किया है, जिससे इसे पानी में घुलना आसान हो जाता है और कंक्रीट के गुणों में बाधा नहीं आती है।

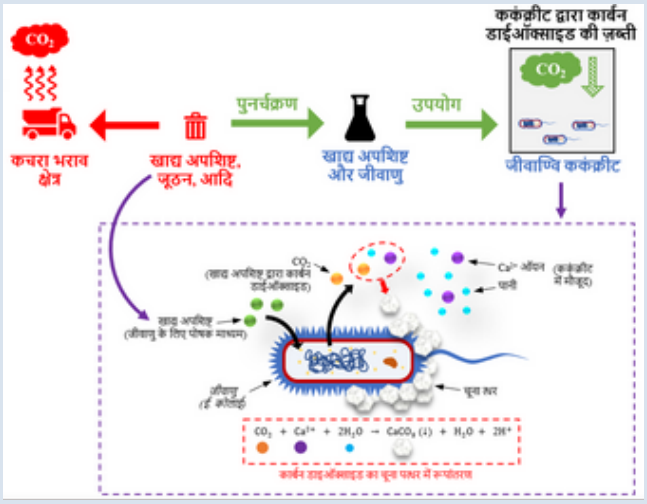

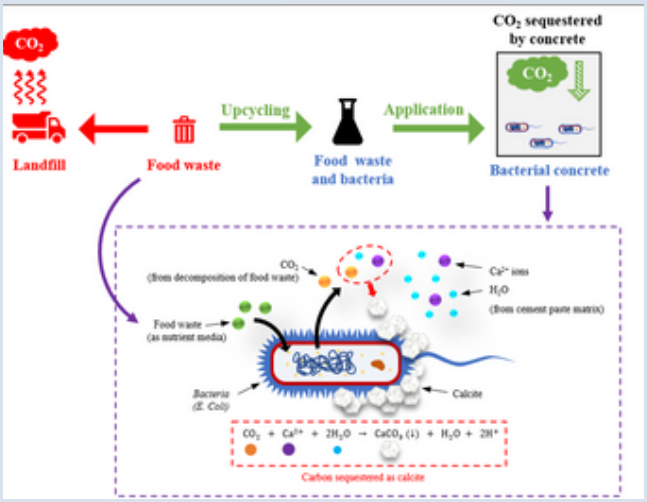

कुछ झलकियाँ

क्षेत्रीय स्पिक मैके 2025 के दौरान योग शिविर

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025

सतत जल प्रबंधन पर कार्यशाला आयोजित

विश्व जल दिवस 2025 के अवसर पर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर द्वारा "सतत जल प्रबंधन: नीति, प्रौद्योगिकी और जलवायु लचीलापन" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य देश भर के विशेषज्ञों को एक मंच प्रदान करना था, ताकि भारत में बढ़ते जल संकट के मद्देनजर जल प्रबंधन, स्थिरता और जलवायु अनुकूलन से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया जा सके। यह कार्यशाला आईआईटी इंदौर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस), नई दिल्ली, नर्मदा नदी क्षेत्र अध्ययन केंद्र, डीएसटी सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च और राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (एनएएसआई)- भोपाल यात्रा के सहयोग से संयुक्त रूप से आयोजित की गई। इसका मुख्य उद्देश्य बदलती जलवायु में भारत के जल संसाधनों के प्रबंधन के लिए रणनीतिक समाधान तलाशना था, जिसमें नर्मदा नदी क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया गया। इस पर, आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने जल प्रबंधन नीतियों में नवाचार, शोध और तकनीकी एकीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने जल शक्ति मंत्रालय के साथ आईआईटी इंदौर के चल रहे सहयोग के बारे में चर्चा की और संस्थान द्वारा स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी की स्थापना की घोषणा की। वहीं, आईआईटी इंदौर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर मनीष गोयल ने कहा कि इस कार्यशाला में दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, यानी जल संसाधन प्रबंधन एवं नीति तथा नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन। पहले सत्र में जल गुणवत्ता मानकों, पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों और जल प्रबंधन के आर्थिक पहलुओं पर चर्चा की गई। बाद के सत्र में नदी जल की गुणवत्ता, अपशिष्ट जल उपचार, शहरी जल निकासी और पारिस्थितिक संरक्षण जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई।

पूर्व छात्र सम्मेलन - मुंबई अध्याय

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर द्वारा 22 फरवरी, 2025 को मुंबई के आईटीसी मराठा होटल में पूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। यह सम्मेलन पूर्व छात्रों के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है, जहाँ वे फिर से एक-दूसरे के बीच संपर्क बना सकते हैं, आईआईटी इंदौर में बिताए समय के सुनहरे पलों को याद कर सकते हैं और संस्थान के साथ सहकार्य के लिए भविष्य के अवसरों पर चर्चा कर सकते हैं। इस सम्मेलन का आधिकारिक उद्घाटन आईआईटी इंदौर के निदेशक के संबोधन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने पूर्व छात्रों का स्वागत किया और संस्थान की हालिया उपलब्धियों, विकास के प्रमुख क्षेत्रों और चल रही पहलों को रेखांकित किया। वहीं, पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध के अधिष्ठाता ने अपने संबोधन में आईआईटी इंदौर के भविष्य को आकार देने में पूर्व छात्रों की भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला। इस दौरान, सम्मेलन में विभिन्न विषयों और ग्रेजुएट बैचों का प्रतिनिधित्व करने वाले 75 पूर्व छात्रों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पूर्व छात्रों और आईआईटी इंदौर के बीच एक सुदृढ़ संपर्क को बढ़ावा देना, नेटवर्किंग की सुविधा प्रदान करना और संस्थान के विकास में आगे के योगदान के लिए रास्ते तलाशना था, विशेष रूप से अनुसंधान, विकास और छात्र मार्गदर्शन में। साथ ही, इस अवसर पर, अधिष्ठाता (पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध), अधिष्ठाता (अनुसंधान एवं विकास), अधिष्ठाता (छात्र कार्य), अन्य संकाय सदस्यगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण उपस्थित थे।

विश्व हिंदी दिवस – 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर की राजभाषा समिति के तत्वावधान में दिनांक 10 जनवरी, 2025, पौष शुक्ल पक्ष एकादशी (शुक्रवार) को विश्व हिंदी दिवस - 2025 का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य पर, संस्थान के प्रांगण में "विश्व हिंदी दिवस" मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में संस्थान के अधिष्ठाता (प्रशासन) प्रोफेसर संदीप चौधरी की गरिमामयी उपस्थिति रही। साथ ही, सम्मानित अतिथि के रूप में संस्थान के कुलसचिव श्री एस. पी. होता तथा अध्यक्ष के रूप में संस्थान की राजभाषा समिति के संयोजक प्रोफेसर राजेश कुमार उपस्थित रहे। इस सुअवसर पर, संस्थान की राजभाषा समिति द्वारा प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रिका, चतुर्थ, पंचम व षष्ठ अंक एवं हिंदी कैलेंडर – 2025 का सभी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में, बड़ी संख्या में संकाय सदस्यगण, अधिकारीगण, छात्रगण तथा कर्मचारीगण उपस्थित रहे। इस उपलक्ष्य पर, प्रोफेसर राजेश कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण के माध्यम से सभागार में उपस्थित सभी आगंतुकों को सर्वप्रथम विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर शुभकामनाएँ दी तथा उन्होंने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि संस्थान में राजभाषा समिति व इसके अतिरिक्त अन्य विभागों तथा अनुभागों द्वारा राजभाषा गतिविधियाँ जारी हैं, जो कि हिंदी भाषा के उत्थान के दृष्टिकोण से सराहनीय कार्यान्वयन है। इसके उपरांत, संस्थान के राजभाषा अधिकारी श्री राजीव पाण्डेय ने विगत एक वर्ष के राजभाषा कार्यक्रम व गतिविधियों के बारे में अवगत कराया एवं हिंदी भाषा की व्यावहारिकता पर अपनी बात रखी तथा भविष्य में होने वाली विभिन्न राजभाषा गतिविधियों के बारे में लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इसी क्रम में, समारोह के मुख्य अतिथि एवं संस्थान के अधिष्ठाता (प्रशासन) प्रोफेसर संदीप चौधरी ने अपने भाषण में सबसे पहले कार्यक्रम में उपस्थित श्रोताओं का विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर अभिवादन किया। उन्होंने कहा कि संस्थान के लिए यह गर्व का विषय है कि यहाँ राजभाषा गतिविधियाँ निरंतर हो रही हैं तथा ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पिछले कुछ वर्षों से इन गतिविधियों में सक्रियता बढ़ी है और संस्थान के सदस्यों का रूझान हिंदी भाषा में बढ़ा है, जो कि हिंदी भाषा के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य में राजभाषा संबंधी कार्यों के लिए संस्थान की ओर से संपूर्ण सहायता प्रदान की जाएगी। वहीं, समारोह के सम्मानित अतिथि एवं संस्थान के कुलसचिव श्री एस. पी. होता ने सबसे पहले आईआईटी इंदौर समुदाय को विश्व हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दी। इसी क्रम में, उन्होंने संस्थान में पिछले वर्ष राजभाषा से जुड़ी सभी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के लिए संस्थानवासियों की सराहना की। इसके बाद, राजभाषा समिति के राजभाषा अधिकारी श्री राजीव पाण्डेय ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों एवं आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापन किया। साथ ही, उन्होंने विशेष रूप से राजभाषा समिति के सदस्य श्री नीरज कुमार सोनी, सुश्री पूजा तिवारी व श्री शिशिर कुमार का सफलतापूर्वक आयोजन के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया।

पुरस्कार समारोह, दिशा,
दृष्टि सीपीएस व आईआईटी इंदौर

आईआईटी इंदौर दल की
हिरोशिमा विश्वविद्यालय, जापान यात्रा

डॉ. राजेश एस. गोखले, सचिव, डीबीटी
के साथ विचार-विमर्श सत्र

सिद्धि *2.0*,
दृष्टि सीपीएस व आईआईटी इंदौर

डॉ. राजेश एस गोखले, सचिव, डीबीटी
द्वारा संस्थान व्याख्यान सत्र

उन्नत उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम
आईआईटी इंदौर

सिद्धि *2.0:* विचार विमर्श
दृष्टि सीपीएस व आईआईटी इंदौर

समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर बैठक
आईआईटी इंदौर व सीएसआईआर: एम्प्री, भोपाल

रक्तदान शिविर
आईआईटी इंदौर

क्षेत्रीय स्पिक मैके *2025*
प्रेस वार्ता

पैनआईआईटी वर्ल्ड ऑफ़ टेक्नोलॉजी कॉन्फ्रेंस
मुंबई

साइबर सुरक्षा जागरूकता सत्र
आईआईटी इंदौर

उच्च अधिकारीगण

प्रोफेसर सुहास एस. जोशी, निदेशक
प्रोफेसर संदीप चौधरी, अधिष्ठाता (प्रशासन)
श्री एस. पी. होता, कुलसचिव

राजभाषा समिति

प्रोफेसर राजेश कुमार, संयोजक
प्रोफेसर शरद गुप्ता, सदस्य
श्री राजीव पाण्डेय, सदस्य सह राजभाषा अधिकारी
श्री नीरज कुमार सोनी, सदस्य
सुश्री पूजा तिवारी, सदस्य
श्री शिशिर कुमार, सदस्य सचिव

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
खंडवा रोड, सिमरोल, इंदौर
मध्य प्रदेश - 453552

अस्वीकरण: यह एक समाचार पत्रिका है जो कि सामान्य जानकारी के लिए है। भविष्य में, इसे कानूनी, वित्तीय या किसी अन्य उद्देश्य के लिए संदर्भित नहीं किया जा सकता।